दूरी का प्रत्यक्षीकरण

- Dr. B.K.

Part-I

1

मनोविज्ञानियों ने दो प्रकार के दूरी आकार अथवा गहराई के प्रत्यक्षीकरण के बारे में बताया है -

(a) एकनेत्रीय संकेत (Monocular Cues)
(b) द्विनेत्रीय संकेत (Binocular Cues).

(a) एकनेत्रीय संकेत - वस्तु के आकार, दूरी या गहराई के प्रत्यक्षीकरण में कुछ ऐसे कारक या संकेत होते हैं, जिनकी उपस्थिति एक आँख के उत्तेजित होने पर निर्भर करती है। इस प्रकार के संकेत को व्यक्ति भिन्न-भिन्न वस्तुओं के संपर्क में आने से सीखता है। इन संकेतों को द्वितीय संकेत अथवा दृष्टि संकेत भी कहते हैं।

इसका विवरण :-

(a) आकार - वस्तु के आकार के आधार पर वस्तु का ज्ञान होता है। जब वस्तु नजदीक होती है, तो अक्षिपटल पर उसकी बड़ी प्रतिमा बनती है और दूर होने पर छोटी बनती है। जैसे हवाई जहाज जब नजदीक होता है, तो उसका आकार बड़ा बनता है, परंतु जैसे-जैसे वह दूर जाता रहता है उसका आकार छोटा दिखलाई पड़ता है।

(b) हस्तक्षेप - जब एक पंक्ति में दो वस्तुएँ होती हैं, तो एक वस्तु दूसरी वस्तु को पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से ढँक लेती है। जो वस्तु ढँक लेती है, वह नजदीक होती है और जो ढँक जाती है वह दूर होती है।

(e) रेखीय परिदृश्य - जब सामान्तर वस्तुएँ सामान्तर दिखाई पड़ती हैं, तो उनकी दूरी कम होती है और जब वे असामान्तर अर्थात आपस में मिलती हुई दिखाई पड़ती हैं, तो उनकी दूरी अधिक होती है।

Ex- जब हम रेल की पटरियों को नजदीक से देखते हैं, तो वे सामानांतर दिखाई पड़ती हैं और जब दूर से देखते हैं तो दोनों पटरियाँ आपस में मिलती हुई दिखाई पड़ती हैं।

(g) स्पष्टता - वस्तु की स्पष्टता या अस्पष्टता के आधार पर भी उसकी दूरी का ज्ञान होता है। नजदीक की वस्तु स्पष्ट दिखाई पड़ती है और दूर की वस्तु स्पष्ट दिखाई नहीं पड़ती है।

(g) गतिलम्बन - वस्तु की गति के दो संकेत होते हैं, जिन्हें गति की तीव्रता तथा गति की दिशा कहते हैं।
जब दो वस्तुएँ समान तीव्रता से गतिशील हों और एक वस्तु अधिक तेजी से गतिशील नजर आये और दूसरी मंद गति से गतिशील दिखाई पड़े तो इसका यह अर्थ है, कि पहली वस्तु से दूसरी वस्तु की दूरी अधिक है।

(f) छाया - यदि प्रकाश निरीक्षक की ओर से आ रहा हो और एक वस्तु की छाया दूसरी पर पड़ रही हो तो पहली वस्तु की अपेक्षा दूसरी वस्तु की दूरी अधिक होगी।

(b) द्विनेत्री संकेत - कुछ ऐसे संकेत होते हैं, जो दोनों आँखों के उत्तेजित होने पर निर्भर करते हैं। इन संकेतों का आधार आँखों की शारीरिक प्रक्रिया है। इसी कारण इन्हें शारीरिक संकेत भी कहते हैं।
जब व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करता है, तो उसकी दोनों आँखों में तथा प्रतिमाओं में कुछ शारीरिक परिवर्तन होते हैं, जिनके आधार पर वस्तु की दूरी या गोलाई का ज्ञान होता है। इन संकेतों को अदृष्टि संकेत भी कहते हैं; क्योंकि इनका कोई संबंध अक्षिपटल की प्रतिमा से नहीं होता है।
ये निम्नांकित हैं :-
(a) समायोजन प्रक्रिया - समायोजन की प्रक्रिया में सीलियरी पेशियाँ मदद करती हैं। ये पेशियाँ आवश्यकतानुसार फैलती-सिकुड़ती रहती हैं। इनके फैलने-सिकुड़ने के कारण ही नेत्र लेंस की वक्रता बढ़ती-घटती है।
(b) समवाय प्रक्रिया - जब वस्तु नजदीक होती है तो आँखें अंदर की ओर मुड़ती हैं, और जब वस्तु दूर होती है, तो आँखें बाहर की ओर मुड़ती हैं। आँखों की इसी प्रक्रिया को समवाय प्रक्रिया कहते हैं।
(c) प्रतिमा भिन्नता - जब व्यक्ति किसी वस्तु को देखता है, तो उसकी दोनों आँखों में दो अलग-अलग प्रतिमाएँ बनती हैं। इन दोनों प्रतिमाओं में कुछ भेद होती है। इसे ही प्रतिमाओं का भिन्नता कहते हैं।